

वातावरण

हमें शरीर, मन व वाणी से ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे वायुमण्डल दूषित होता है। और हमें ऐसे किसी प्रकार के वायुमण्डल में नहीं रहना चाहिए, जिससे शरीर, मन या वाणी दूषित हो। हमें ऐसी कोई क्रिया नहीं करनी चाहिए मन से, शरीर से या वाणी से जिससे वायुमण्डल दूषित हो- एक बात। हमें ऐसे वातावरण में, atmosphere में नहीं रहना चाहिए, जिससे मन या शरीर, जिससे वाणी दूषित हो, ऐसे वातावरण में भी नहीं रहना चाहिए। मनुष्य जो भी संकल्प करता है मन में, जो भी वाणी के द्वारा वचन बोलता है, जो भी शरीर के द्वारा कार्य करता है, उसका वायुमण्डल पर प्रभाव होता है, effect होता है। और जिस वातावरण में हम रहते हैं, उस वातावरण का भी हमारे ऊपर, हमारे मन पर प्रभाव पड़ता है।

देखिए, वायु जो है हमारे भीतर किस रूप में रहते हैं? प्राण रूप में। ठीक है? हम श्वास लेते हैं तो बाहर का वायु जो है हमारे भीतर प्रवेश करता है। तो यदि हम दूषित वातावरण में रहेंगे, जहाँ पर निन्दा होती हो, negative बातें बोली जाती हों, तो वो जो वायु है वह हमारे भीतर प्रवेश करेगी और हमें भी दूषित करेगी। उसी प्रकार से यदि हम ऐसे व्यक्तियों के साथ रहते हैं, ऐसे सन्तों के सामने रहते हैं कि जो एकदम शुद्ध रहते हैं, जिनका किसी से देष्ट नहीं है, जो काम के अधीन नहीं है, जब उनके सामने या साथ रहते हैं, तो हम पाते हैं वे गुण हमारे अन्दर भी प्रवेश हो जाते हैं, चाहे अल्प समय के लिए ही हों।

आप कई बारी सन्तों के सामने होते हैं, आपको लगता है कि काम तो कभी सता ही नहीं सकता, क्रोध कभी सता ही नहीं सकता, क्यों? उनके प्रभाव की वजह से। क्योंकि उनका जो, जो वायुमण्डल है, उनसे ऐसी वायु निकल रही है कि वह हमारे भीतर जब प्रवेश करती है, तो कुछ क्षण के लिए ही हमें भी वैसा ही कर देती है। ठीक उसी प्रकार से यदि negative व्यक्तियों के साथ में रहेंगे, तो उसका हमारे ऊपर negative प्रभाव भी होता ही होता है।

अब, जैसे बाहर से वायु भीतर आया, तो जितनी शक्ति उस वायु में है और वैसे ही उसको supporting कीटाणु अगर अन्दर मिल गए, तो वह कार्य करेगा। जैसे मान लीजिए किसी को किक्रेट मैच देखने का शौक है, कोई किसी ने कोई खबर सुना दी तो बाहर से वायुमण्डल वह आया वातावरण, तो वही चिंतन मन में, वाणी, शरीर में आ जाएगा, ठीक है? एक व्यक्ति है जिसका क्रिकेट से कोई मतलब ही नहीं है, ठीक है, वह कुछ भी बोल रहा है उसको कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा।

तो भीतर कीटाणु हों और बाहर से, और वैसा atmosphere मिल जाए, तो और सब खराब हो जाता है। जैसे हमारे भीतर भी negative बातें और negative लोगों का

और सम्पर्क मिल जाए तो हम बिल्कुल, सब खराब हो जाता है। जो, जिनके मन में वैर होता है, हिंसा होती है, इर्ष्या होती है, वे व्यक्ति अपना तो सर्वनाश करते ही हैं पर जिस वायु में, जिस वायुमण्डल में रहते हैं उसको भी दूषित करके औरों का भी नुकसान करते हैं। और जो भोले-भाले जो सामान्य व्यक्ति होते हैं अगर उस वायुमण्डल में प्रवेश कर जाएँ, तो ऐसा होने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है, इतने negative जो कीटाणु प्रवेश कर जाते हैं।

तो अपने मन, वाणी और शरीर को बहुत सचेत स्प से हमें उसको क्रियान्वित करना चाहिए ताकि उससे वातावरण, वायुमण्डल दूषित न हो। और हम ऐसे दूषित वायुमण्डल में न रहें, जिससे हम दूषित न हों।

देखिए, भक्ति प्राप्त होना कोई मज़ाक नहीं है। यह भक्ति प्राप्त हो गई है, सभी आचार्यण हमें क्या बोलते हैं? कि बहुत सावधान रहो, 'यह तलवार की धार पर चलने के समान है', हर समय सावधान रहो। कोई गलत विचार तुम्हारे मन में प्रवेश न करने पाए, एक भी गलत वाक्य तुम मत बोलो, शरीर से कोई गलत कार्य मत करो। बहुत सावधानी की आवश्यकता है, यह भक्ति प्राप्त हो गई है।

साधु संग भगवद् कृपा से प्राप्त होता है, यह ठीक है, पर उसको हम value नहीं करेंगे, तो वो जा भी सकता है। तो सत् संकल्प होने चाहिए हमारे, सही मन में विचार, वाणी, सत् विचार होने चाहिए। परन्तु यदि सही संग प्राप्त नहीं करेंगे, सही आहार ग्रहण नहीं करेंगे, तो गलत आहार से तो हमारे अन्दर भी पूर्व कितने जन्मों की कुटिलता भरी हुई है, negative चीज़ें हैं, उसको वैसे ही supporting factor बाहर से मिल जाएगा, तो वो ज्वालामुखी बनकर हमारा नुकसान कर देगा। तो बहुत ध्यान रखना चाहिए जब हम संग करते हैं या जब हम आहार ग्रहण करते हैं। छान्दोग्य उपनिषद में बताया गया है-

**"आहार शुद्धौ सत्वशुद्धि सत्वशुद्धौ
ध्वास्मृतिः स्मृतिलाभे सर्वग्रन्थिनां विग्रहमोक्षः ॥"**

(छान्दोग्य उपनिषद् ७.२६.२)

आहार शुद्धौ सत्वशुद्धि -- आहार शुद्ध होता है, तो उससे हमारी भीतरी शुद्धि होती है। सत्वशुद्धौ ध्वास्मृति, स्मृति लब्ध्वा -- उससे ध्वास्मृति होती है, जितना मन शुद्ध होता है। आहार शुद्ध ग्रहण करना पड़ता है। कौन सा आहार? जिस वातावरण में रहते हो। जो कानों में शब्द प्रवेश करते हैं वो आहार है कानों का। आहार का मतलब केवल भोजन नहीं है, रोटी और चावल नहीं है आहार का मतलब। आहार मतलब जो आप ग्रहण कर रहे हो, भिन्न-भिन्न इन्द्रियों से, भिन्न-भिन्न इन्द्रियों का

आहार। तो यदि वह दूषित होगा तो आप में कभी भी साफ, सही विचार उत्पन्न हो ही नहीं सकते, अगर आपका आहार दूषित है।

तो बहुत ध्यान से हमें सही आहार ग्रहण करना चाहिए। जैसे हम filtered पानी पीते हैं बहुत ध्यान से, उसी प्रकार से हम कोई भी शब्द सुनें, तो वह एकदम filtered होना चाहिए, नहीं तो हमारा, हमारा नुकसान कर सकता है। और सदा सचेत रहना चाहिए कि वाणी के ढारा, मन के ढारा कोई भी अपराध न होने पाए। भक्ति भले कम हो, पर हो अपराध-रहित। क्योंकि अपराध जो हैं वो करोड़ों-करोड़ों गुणा ज्यादा खतरनाक हैं पाप से। पाप तो फिर माफ हो सकते हैं, अपराध नहीं माफ होते। और जितने बड़े, 'नामापराध'...., सबसे बड़ा नामापराध क्या है? 'जो हरि भगवान् के नाम का गुणगान करने में लगे हों, उनकी निन्दा करना, उनके बारे में गलत बोलना, सोचना।' तो यह सबसे बड़ा नामापराध है। तो नाम का फल ही प्राप्त नहीं होगा, जब हम पहले step में ही अगर व्यक्ति अटक जाएगा या उस प्रकार का गलत संग प्राप्त हो जाएगा।

अब खराब विचार तो हमारे मन में पूर्व जन्मों से भी हो सकते हैं, ठीक है न? उसको अब और खराब वातावरण न दें ताकि वो पनप पाएँ। वो तो हो सकते हैं पूर्व जन्मकृत परन्तु और वातावरण देंगे तो वो multiply होंगे। उसे, उन्हें diet नहीं देंगे तो वे मर जाएँगे, जो खराब विचार हैं। Let them die their own death, उनको और food न दें।

आप सब जो भक्ति भक्ति करने आए हैं, भक्तों के साथ जो होते हैं, आप, हम लोग यहाँ पर साधुसंग करने आए हैं, ठीक बात है? हम यहाँ पर socializing करने नहीं आए हैं, बातचीत करने के लिए नहीं आए। हम क्या करने आए हैं? साधुसंग। क्यों करने आए हैं? क्योंकि इससे हमारा upliftment होगा, हम इससे ऊँचे उठेंगे भक्ति में और शुद्ध होंगे, और भगवान् के निकट जाएंगे। केवल इसी कारण से साधुसंग किया जाता है।

यदि ऐसा साधुसंग हमें, हमें साधुसंग वह मिल रहा है जिसमें अगर negative बात हो, वह साधुसंग नहीं है। शास्त्र बोल रहे हैं।

**"साधुसंग साधुसंग सर्वशास्त्रे क्या।
लव-मात्र साधुसंगे सर्वसिद्धि ह्य।।"**

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २२.५४)

यह बात तो बोल रहे हैं कि साधु का संग करो, पर यह बात नहीं बोल रहे- कोई भी व्यक्ति यदि हरिनाम ले रहा हो, तो उसका संग करो; न न न। हम सब क्या

हैं? स्पानुगा। 'स्पानुगा' में सबसे महत्वपूर्ण उपदेश है- उपदेशमृत, स्प गोस्वामी का। उसमें ग्यारह (११) श्लोक हैं केवल। उन ग्यारह श्लोकों में बताया गया है कि कैसे भक्तों का संग करो। कैसे भक्तों का संग करो? याद रखिएगा, हम यहाँ socializing करने नहीं आए हैं, हम यहाँ साधु संग करने आए हैं। जो व्यक्ति, स्प गोस्वामी बता रहे हैं- 'प्रणाम सबको करो जो हरिनाम लेता है, परन्तु संग उनका करो जो गुरु की सेवा में निष्ठा से लगे हुए हैं और जो निन्दा की प्रवृत्ति से रहित हैं, केवल उनका संग करो, नहीं तो संग मत करो।'

गुरु की सेवा में निष्ठा, निष्ठा से जो लगा नहीं हैं तो हमारे, अगर हम ऐसे व्यक्ति का संग करेंगे, तो हमारे अन्दर भी वैसे ही कीटाणु प्रवेश करेंगे ही करेंगे। वह व्यक्ति अपना तो नुकसान कर रहा है, हम उनके वातावरण में, दृष्टिं वातावरण में रहेंगे, तो हमारा भी वही हाल होगा जो उसका हुआ है। और निन्दा, निन्दा रहित तो अगर हम खुद बनना चाहते हैं, तो हमें वैसे वातावरण में रहना होगा जहाँ पर कोई निन्दा इत्यादि न होती हो। हमें बहुत कोशिश करके अपने हर प्रकार के अनर्थ को निकालना चाहिए, बाहर। और बहुत ही मेहनत करके हर प्रकार का सद्गुण लाना चाहिए। हम जो संग कर रहे हैं वह सद्गुण लाने के लिए कर रहे हैं, यह बात याद रखिए।

और मध्वाचार्य बताते हैं कि जो व्यक्ति साधुओं से सही तरह संग करना नहीं सीखता, तो भगवान् कृष्ण स्वयं उसकी भक्ति के मार्ग में ऐसे रोड़े अटकाते हैं कि भगवान् तक वह भक्त न पहुँच पाए कभी भी। साधुसंग मिलना एक बात है, उसको value करना properly, वह दूसरी बात है। तो यदि हम properly value नहीं करेंगे, नहीं समझेंगे, किस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए, तो भगवान् खुद स्वयं व्यवधान डालेंगे जिससे हम उनकी प्राप्ति कभी न कर पाएँ। वातावरण बहुत महत्वपूर्ण है जिसमें हम रहते हैं, जैसे अंग्रेजी में कहा भी जाता है- 'You are whom you associate with.' 'आप वही हो जिनका आप संग करते हों।' मेरा निजी अनुभव भी है कि जब तक व्यक्ति खुद ज्यादा तमोगुणी न हो, तो वह जो दूसरे निन्दा वाले भक्तों का संग कर नहीं सकता।

हमें हर सुबह, every morning यह निश्चय करना चाहिए कि मैं अब से, जो गलती हुई सो हुई, मैं अब से- रोज़ सुबह निश्चय करें कि मैं अपने मन को, वाणी को, शरीर को...., से ऐसा कोई कार्य नहीं करूँगा जिससे वायुमण्डल दृष्टित हो। और मैं ऐसे बिल्कुल वायुमण्डल में नहीं रहूँगा, जिससे मेरा मन, मेरी वाणी, मेरा शरीर दृष्टित हो। रोज़ हमने संकल्प करना है। गलती हुई, गलती सबसे होती है। परन्तु, अब से नहीं, रोज़ सुबह संकल्प करें, दृढ़ संकल्प, बिल्कुल नहीं।

और देखिए, हमारे मन में खराब विचार सबके मन में होते हैं पूर्व जन्मों के अपराधों के कारण, पूर्व जन्मों के महत् अपराध के कारण भी होते हैं। तो अब हम क्या कर रहे हैं कि अपने मन को हटा रहे हैं भौतिक विषयों से, पर अगर उसे हम सही खुराक नहीं देंगे तो फिर से वह खराब संग, खराब वातावरण में चला जाएगा। तो अगर हम सही साधु संग नहीं करेंगे, तो गलत संग में तो जाएगा ही जाएगा।

जीव तट पर नहीं खड़ा रहेगा, या ईश्वर की ओर जाएगा या भोग की ओर जाएगा, खड़ा नहीं रहेगा बस ऐसे ही। यदि सही संग नहीं कर रहे, तो गलत संग तो करोगे ही करोगे- 'You are whom you associate with.'

**"असंशयं महाबाहो मनो दुर्निश्चहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्णते॥"**

(गीता-६.३४)

अभ्यास क्या है? कि सही स्थ से सही संग करें। वैराग्य क्या है? गलत संग को छोड़ें। पर गलत संग छोड़ेंगे कैसे, जब तक सही को पकड़ेंगे नहीं? दोनों एक साथ करने हैं- Do's and dont's. कोई चीज़ हम छोड़ रहे हैं, पर किसी को हम पकड़ नहीं रहे, तो कब तक छोड़ोगे? फिर से वापिस उस चीज़ में आ जाएँगे।

और जहाँ तक संग की बात रही- संग, एक अंग्रेजी में कहावत है कि- 'One flower can be my garden.' 'एक फूल मेरा garden हो सकता है'- तो संग इतना पर्याप्त है। यदि हम वास्तव में serious हैं राधारानी की सेवा प्राप्त करने के लिए, तो वह पर्याप्त है। One flower can be my garden, otherwise पूरा garden भी मिल जाए, तो भी हमारे को संतुष्टि नहीं होगा।

देखिए भगवान् के धाम में मंजरी के सबसे प्रेममय सम्बन्ध होते हैं, loving relationships होते हैं, राधारानी से, अनंग मंजरी से, गुरु मंजरी से, गुरु मंजरी वर्ग से, सबसे, कृष्ण से, सबसे loving relationships होते हैं। तो जो हम साधना काल में नहीं करेंगे, loving relationships की practice, वह सिद्धि में- सिद्धि किस बात की मिलेगी हमें? सिद्धि तो loving relationships की मिलनी है। तो जो चीज़ हमने साधना में नहीं की

**"युगल चरण सेवि, निरन्तर एइ भावि,
अनुरागी थाकिबो सदाय।
साधने भाविबो जाहा, सिद्धदेहे पाबो ताहा,
रागपथर एइ से उपाय॥"**
(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ५५ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

तो जो आपने साधना में जो कार्य नहीं किया वह सिद्धि, उसकी सिद्धि कैसे होगी? तो प्रेममय सम्बन्ध तो तभी होंगे, जब पहले सही व्यक्तियों से सम्बन्ध होंगे। तो यही practice करनी है हमने- सही संग हो, उसे जाने, उसे पहचाने, cultivate करें loving relationships और यही धीरे-धीरे आगे चलकर बढ़कर, हमें सिद्ध स्वस्थ की प्राप्ति होगी। मंजरी जो है, care की मृति है, relationships की मृति है, सेवा की मृति है। जो हम यहाँ नहीं कर रहे तो अचानक कैसे हो जाएगा? इसी की साधना करनी है। और साधना में सबसे महत्वपूर्ण रहता है वातावरण, जिसमें हम रहते हैं।

मन कमज़ोर होता है न? तो उसका एक ही उपाय है- ऐसा महत पुरुषों का संग करें कि उनके संग से..., जो कमज़ोर नहीं हैं उनके पास में रहेंगे तो हमारी भी सारी कमज़ोरी चली जाएगी- You are whom you associate with. हमारे संकल्प इतने दृढ़ नहीं हैं, तभी कमज़ोरी आती है- संग करें जिनके संकल्प एकदम दृढ़ हैं, तो हमारे अन्दर भी वही कीटाणु प्रवेश करेंगे, positive कीटाणु, दृढ़ संकल्प के- कि भक्ति करना है, care करना है, अपराध नहीं करना, एकदम दृढ़ता से भक्ति करना है। तो सब कुछ साधु संग पर ही निर्भर है, कैसा साधु? वातावरण बहुत शक्तिशाली होता है। वे इतने powerful संकल्प, इतने powerful vibrations जा रहे हैं, कहीं पर विचार जा ही नहीं रहे।

भजनशील व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे, तो भजन करने का मन करेगा ही सही। जो साधु हैं अगर वे कुछ बोल नहीं भी रहे, उनके होने मात्र से ही इतनी, सिर्फ़, सिर्फ़ existence से ही इतनी शक्ति है कि उसी से ही शुद्धि हो जाती है, बोले बिना ही।

**"गङ्गार परश हैले पश्चाते पावन।
दर्शनि पवित्र करो एइ तोमार गुण॥"**

(प्रार्थना १९ - श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

यह नहीं बोला 'प्रवचने देबो एइ तोमार गुण'-- न। 'दर्शनि पवित्र करो एइ तोमार गुण'। दर्शनमात्र से ही पवित्र करते हैं, बिना बोले। अगर साधु ने हमारे से बात कुछ बोल दी, तो सोचिए वह साधु जो है सीमित समय के लिए है, उसने जो एक श्वास दी है, वह वापिस नहीं आएगी, वह थोड़े से श्वासों के लिए यहाँ पर है। तो उसने अपने जीवन का वह हिस्सा दिया है जो उसे कभी नहीं मिलेगा। जो सामान्य व्यक्ति है वह तो अनन्त श्वासों लेता रहेगा। एक जन्म खत्म, एक और आ जाएगा, दूसरा खत्म तीसरा आ जाएगा।

अगर वास्तविक साधुसंग प्राप्त हो रहा है उसकी वह सीमित श्वासों हैं, इस संसार में। अगर वह अपना समय दे रहा है, अपने जीवन का वे एक भाग दे रहा है, जो

कभी भी वापिस नहीं मिलेगा। 'अन्न का कण और साधु के क्षण को कभी waste नहीं करना चाहिए', कभी कभी कभी भी waste नहीं करना चाहिए। एक एक अन्न के कण को value करें, साधु के एक एक क्षण को value करें। सबको नहीं मिलता अन्न का कण, न ही सबको मिलता है साधु का क्षण, बहुत भाग्यवान् व्यक्तियों को मिलता है। चींटियों को देखो, एक एक अन्न के कण के लिए क्या क्या करती हैं। देखा है, चींटी क्या क्या करती है? एक-एक कण के लिए। तो पूरा value करना चाहिए अन्न के कण को और साधु के क्षण को। यह understanding clear हो गया सबको?

और जो हमारे से..., एक तो वातावरण का हमारे पर प्रभाव पड़ता है और जैसे हम हैं उसका भी वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। हम खराब हैं, तो हमारे साथ जो भी होगा वह भी धीरे-धीरे वैसे ही हो जाएगा। और हम अच्छे हैं, तो धीरे-धीरे एक अच्छे व्यक्ति के साथ..., खराब व्यक्ति ज्यादा दिन तक रह नहीं सकता और एक खराब व्यक्ति के साथ अच्छा, वह सम्भव नहीं है। Modes match होते हैं।

और एक और बात, जैसे हम जब भी साधुजन मिलते हैं, प्रश्न करते हैं, अच्छी बात है, साधु से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। परन्तु अगर हम वास्तविक विधि जानें, जो जिससे ज्ञान हृदय में टिकेगा, वह विधि थोड़ी अलग सी है। हम चाहते क्या हैं? कि जो प्रश्न उत्तर करेंगे, जो धर्म का ज्ञान है वह कहाँ रहे? जो वास्तविक धर्म है, वो कहाँ रहता है? वह साधु के हृदय में रहता है, तो हम भी चाहते हैं हमारे हृदय में रहे, वह कैसा रहेगा? जब साधु के हृदय से वह आपके पास आएगा। वह कैसे होता है? उसकी विधि भगवान् ने गीता में बताई है-

**"तद्विद्धि प्रणिपातेन परिग्रन्थनेन सेव्या।
उपदेश्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥"**

(गीता-४.३४)

तद्विद्धि- यह विधि है, प्रणिपातेन, प्रणिपातेन फिर परिग्रन्थनेन -- surrender करें, फिर प्रश्न करें। ऐसा नहीं कि ऐसे ही कुछ भी उटपटांग प्रश्न कर लें। और साथ में क्या है? सेव्या। बिना सेवा करे अगर हम सोचें कि arm chair philosopher बनकर प्रश्न उत्तर करेंगे, "हाँ so-so, yeah-yeah, अच्छा, भई ऐसे क्यों हैं, ऐसे क्यों हैं?" हाँ वह आपको कभी कुछ समझ नहीं आएगा। क्यों? क्योंकि आप arm chair philosopher हो केवल। विधि है- 'तद्विद्धि प्रणिपातेन'- प्रणिपातेन पहले बोला गया है, परिग्रन्थनेन नहीं बोला गया, परिग्रन्थनेन number दो पर आता है, फिर सेव्या। सेवा करेंगे तो फिर उसके बाद है- 'उपदेश्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः' - फिर

वह जब ज्ञान दिया जाएगा, तत्वदर्शी महापुरुष द्वारा, तब वह ज्ञान हमारे हृदय में stay करेगा। उसका अगला श्लोक क्या है ४.३४ का ४.३५?

**"यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यस्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषाणि द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि॥"**

(गीता-४.३५)

'यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं भवति'-- तुम्हारा वह ज्ञान प्राप्त होने के बाद पुनः मोह नहीं होगा। जब इस प्रकार की विधि से ज्ञान प्राप्त होगा फिर मोह नहीं होगा, फिर confusions नहीं होंगे, फिर doubts नहीं होंगे। क्यों? क्योंकि वह हृदय में ज्ञान गया। गीता में सब कुछ बताया गया है। यज्ज्ञात्वा - ऐसा ज्ञानकर फिर मोह नहीं होता।

साधु की एक, एक quality होती है- वह अकेले में मेला होता है और मेले में अकेला होता है, यह साधु का natural feature है। जब वह अकेला है तब भी वह अकेला नहीं है, वह हर समय meditating अपना राधारानी पर, गुरु मंजरी पर, अपनी सेवा पर। तो, देखने में लग रहा है वह चल रहा है, अरे, वह चल नहीं रहा, वह पता नहीं क्या-क्या कर रहा है। और दूसरा वह लगेगा वह इतने सबके साथ में है, वह साथ में नहीं है वह सब में अकेला है, like कमल का फूल जल में रहते हुए भी जल में नहीं है, वह बिल्कुल अकेला है कमल का फूल, बिल्कुल, पूरे जल से बिल्कुल अकेला है। परन्तु, हमें भी इस प्रकार से शिक्षा लेना चाहिए कि हम भीड़ में भी बिल्कुल अकेले हैं और अकेले में भी मेला हैं, यह सबके साथ है।

भीतर तो सब- पूरे ब्रह्माम को प्रवेश करने के लिए कुछ इतनी बड़ी space की ज़रूरत नहीं है, हर जगह पर भगवान् हैं, हर जगह पर लीला हो रही है, बस हमको tuning करना है, बस। तो अकेले नहीं हैं, मेला तो हमेशा है, हमको tuning करना है। जैसे कि- the waves are there, हमारा अगर वह cable तार लगा है, तो वह channel on हो जाता है। यदि अपने स्वरूप पर बार-बार mediate करेंगे, बार-बार स्वरूप पर mediate करेंगे तो धीरे-धीरे क्या होगा? थोड़ा-थोड़ा clear होना शुरू होगा कि मैं कैसे दिखती हूँ, थोड़ा थोड़ा clear होगा। जैसे थोड़ी लम्बाई पता चलेगी अपनी या अपना काठ, कद काठ पता चलेगा, धीरे-धीरे अपना चेहरा reveal होगा- धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा। तो धीरे-धीरे होगा, बारम्बार - अभ्यासेन तु कौन्तेय, अभ्यास करना होगा..., बार बार अपने स्वरूप पर चिन्तन करना होगा क्योंकि जब चिन्तन करेंगे, तो चिन्तन से ही अनुभव होगा। अनुभव होने का कोई और मार्ग नहीं है; चिन्तन को ही प्रगाढ़ करना होगा।

महापुरुष में और हम में क्या भेद है? कि उनका चिन्तन प्रगाढ़ है, और क्या भेद है? वह चिन्तन एकदम intense, concentrated है। कोयले में और हीरे में क्या भेद है? दोनों ही carbon हैं, एक intense carbon है, एक loose carbon है। तो चिन्तन ही है, एक intense चिन्तन है, एक loose चिन्तन है। 'एक फूल जो है वही मेरा पूरा बगीचा हो सकता है'। इसको ऐसे लें कि जैसे-

"गुरु-मुख-पदम-वाक्य, चिन्तते करिया ऐक्य, आर ना करिह मने आशा।

श्रीगुरुचरणे रति, इह से उत्तम-गति, जे प्रसादे पूरे सर्व आशा॥"

(श्री श्री प्रेमभक्तिचन्द्रिका ४- श्रील नरोत्तम ठाकुर महाशय)

That गुरु-मुख-पदम-वाक्य -- that is my life, that is my garden, that is my life. That is not even garden - that is my life, that is my world. यह तो छोटी बात है- a flower can be your..., actually a flower can be my life. 'गुरु-मुख-पदम-वाक्य'- तो अगर हम वाकई में serious हैं, तो एक पंक्ति पर पूरा जीवन हम चला सकते हैं। तो हमारी पूरी life हो सकती है वह पंक्ति, गुरु के मुख से निकली हुई। Mañjarīs का क्या है जीवन? केवल राधारानी की प्रसन्नता, that's all. Even कृष्ण की प्रसन्नता भी नहीं, 'राधारानी की प्रसन्नता'। कृष्ण क्यों? क्योंकि वह राधा, राधा के प्राण वल्लभ हैं, केवल इसलिए। One flower can be my garden. अगर हम यह समझ जाएँ कि हम यहाँ साधु संग करने आए हैं, socializing करने नहीं आए हैं, तो one flower is sufficient, is sufficient.

आपको उदाहरण दूँ, जैसे petrol pump है, आप petrol pump पर जाते हो, यह थोड़ा न कि वो सारे पाइपों से petrol डलवाते हो। डलवाते हो कि तुम भी डालो, तुम भी डालो- 8 pipe वाले वे डिब्बे हैं उसमें- ऐसे तो नहीं बोलते, एक ही- हो गया। आपको petrol से मतलब था न, कि socializing करनी थी? अगर petrol से मतलब था तो एक उसमें डाला, आपका petrol full, आप गाड़ी चलाओ अपना। One flower can be my garden, one pipe can be my life - this way.

इसके सम्बन्ध में कुछ कोई और प्रश्न व्यक्तिगत रूप से पूछना चाहते हैं, तो इस session के बाद में बात कर सकते हैं।